Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

1857 की क्रान्ति और आज़मगढ

डॉ0 शहरयार,
पूर्व शोध छात्र, इतिहास विभाग, शिब्ली नेशनल कालेज, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 7, Issue 6

Page Number : 17-20

Publication Issue :
November-December-2024
Article History
Accepted : 10 Nov 2024
Published : 20 Nov 2024

शोधसारांश– कुंवर सिंह को गतिविधि का ठीक पता था और आज़मगढ़ पहुंचने से पहले ही हमला करने के लिए अपनी सेना को रास्ते के दोनों ओर बिछा दिया। विद्रोहियों की आहट मिलते ही लार्ड मार्कर ने अपना घोड़ा रोक दिया और बैलगाड़ी, हाथी और ऊंट पर लदी युद्ध सामग्री के पहुंचने का इन्तेज़ार करने लगा। देखते ही देखते दोनों ओर से विद्रोहियों की गोलियां बरसने लगी। मार्कर ने तोप के गोलों से विद्रोहियों के छिपने और आड़ लेने वाले घरों पर तोप के गोले बरसाये। ज्यों ही विद्रोही बाहर आये उन पर हमला किया गया। विद्रोहियों ने पीछे हटकर तमसा (टोंस) नदी के पुल पर मोर्चा संभाला।

मुख्य शब्द– विद्रोह, आज़मगढ़, क्रान्ति, मालगुज़ारी, कुंवर सिंह, मार्कर, तमसा (टोंस) नदी।

आज़मगढ़ में विद्रोह आरम्भ के दिनों में हुआ था तो वही इसका समापन अन्तिम दिनों में हुआ। इस दृष्टिकोण से आज़मगढ़ के विद्रोह का विशेष महत्व है।

1857 का विद्रोह आंशिक रुप से सुनियोजित और अंशतः स्वतः स्फूर्त एवं परिस्थितिजन्य था। अवध के पूर्वी आंचल इलाहाबाद, बनारस, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर और आज़मगढ़ में विद्रोह ने कम्पनी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए प्रभावशाली प्रयास किये गये। इनमे से आज़मगढ़ का केन्द्र विद्रोह के आदिम दिनों से लेकर अन्तिम दिनों तक विद्रोह को जीवन्त बनाये रखा था। कुछ तथ्यों के विश्लेषण गौर तलब। बांदा के नवाब अली बहादुर द्वितीय के यहां एक विवाह के अवसर पर अवध के नवाब की अवमानना से क्षुब्ध रियासतदारों, ताल्लुकदारों एवं राजाओं ने कम्पनी सरकार के प्रति अपनी नीतियों को निर्धारित करने का निश्चय किया था। इस सम्बंध में बांदा, फरुखाबाद, इलाहाबाद, महोबा, मुजफ्फनगर, झांसी, रुहेलखण्ड, कानपुर, लखनऊ, गोंड़ा और गोरखपुर में मंत्रणाए हुई और निश्चय किया गया कि कम्पनी को लगान देना बन्द हो। नील कारखानों पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया जाय, इस सम्बंध में सम्पूर्ण ताल्लुकदार परस्पर सहयोग करे और संग्रह की हुई मालगुजारी कम्पनी के बजाए बहादुरशाह ज़फर को भेजा जाए। इस गोष्ठी में राजा इरादत जहां भी थे जो उस समय आज़मगढ़, जौनपुर, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ और फैजाबाद के

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

उपप्रबंधक थे, को जौनपुर, आज़मगढ़, बनारस, बलिया और गाजीपुर कम्पनी की मांग पर राजा इरादत जहां मालगुज़ारी देने से इन्कार कर दिया। राजा इरादत जहां से कुपित ने उन्हें गिरफ्तार कर फांसी दे दी। सैय्यद इकबाल ने राजा इरादत जहां को 1857 की जन क्रान्ति का प्रथम शहीद कहा है।[1] इरादत जहां की आज़मगढ़,जौनपुर, गोरखपुर आदि जिलों में मौजूद भूमि तथा अन्य परिसम्पत्तियों को जब्त कर नीलाम कर दिया गया।[2]

इरादत जहां को दोखा देकर उनके भाई फसीहत जहां ने गिरफ्तार करवाया था।[3] इरादत जहां के पुत्र मुज्जफर जहां ने 16000 विद्रोहियों को इक्कठा किया जिसमें इरादत जहां के सेनापति मखदूम भी थे।[4] अवसर पाकर 26 जून 1857 को थाने और तहसील पर कब्ज़ा कर अपने को राजा घोषित किया था।[5]

बैरकपुर की घटना से पहले ही मालगुजारी वसूली में उपद्रव की आशंका को लेकर 17वी रेजीमेन्ट की पैदल सेना की 5000 सैनिकों की एक टुकड़ी आज़मगढ में पहुंच गई थी।[6] नगर के निकटवर्ती ग्राम हीरापट्टी के निवारी ठाकुर परगन सिंह, जिले के पालीवाल और बिसेन ठाकुरों के बीच सम्पर्क सूत्र स्थापित करने वाले प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। ग्राम बमहुर निवासी शेख रज्जब अली, शेख बेचई, बेचई, चमरु तथा इज़्ज़त आादि मुस्लिम विद्रोहियों से घनिष्ठता थी।[7] जिसकी नियमित बैठक गौरीशंकर घाट पर हुआ करती थी। तभी सूचना मिली कि गोरखपुर से पांच लाख रुपये का खजाना बनारस के लिए जायेगा जिसके साथ आज़मगढ़ से भी दो लाख रुपया होगा। 3 जून लेफ्टिनेण्ट पेलिसर की अध्यक्षता में देसी और अंग्रेज फौजियों के संरक्षण सात लाख रुपये का खजाना रानी की सराय के आगे सरसेना गांम पहुंचा। विद्रोहियों ने एकाएक हमला कर लूट लिया और ब्रिटिश फौजियों को मार भगाया।[8] खजाने के साथ विद्रोही वापस आजमगढ़ आकर जेल पर हमला कर दिया, ताला तोड़कर कैदियों को आजाद कर विद्रोह का विगुल बजा दिया।[9] आज़मगढ़ खजाने, मालखाने, बन्दूक और गोला बारुद पर विद्रेहियों ने कब्जा कर लिया। विद्रोहियों के विरूद्ध अंग्रेज हचिंसन मारा गया।[10] आधी रात होने से पहले विद्रोहियों का आज़मगढ़ शहर पर कब्जा हो गया। पालीवाल ठाकुर पृथ्वीपाल सिंह को आज़मगढ़ का राजा घोषित किया गया। 4 जून को बन्धु सिंह के नेतृत्व वाली सैनिक टुकड़ आज़मगढ़ से लुटे, सात लाख रूपये लेकर कानपुर रवाना हो गये। नाना साहब को पेशवा बनाने में इनका महत्वपूर्ण हाथ था।

20 जून 1857 को राजा बेनी माधव सिंह दल–बल के साथि मंदुरी की बांग में डेरा डाला और दोनो दलों की प्रतिक्षा करते हुए आधी रात हो गई अकस्मात आज़मगढ़ से कम्पनी की फौज ने रात को सोने की अवस्था में आक्रमण कर दिया विप्लवी सेना ने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया परन्तु विद्रोही सेना को पीछे हटना पड़ा। राजा बेनी माधव सिंह इत्यादि प्रमुख नेताओं ने मदुरी के रणक्षेत्र से निकल जाना श्रेयस्कर समझा, व तथा उनके सभी प्रमुख साथियों ने अहरौला मार्ग से अवध निकल गये।[11] कम्पनी के दमन से त्रस्त

कुंवर सिंह बलिया होते हुए नाव से दुबारी घाट पर उतरे और बेनी माधव सिंह से मिलकर विद्रोह की योजना बनायी। 18 मार्च 1858 को अतरौलिया में उनका स्वागत सेनापति हरिकृष्ण ने किया जो रीवा से आकर ठहरे थे। विद्रोह को संगठित करने का काम तेजी से होने लगा। नीलहे गोरे मिस्टर बेनबुल्स को कुंवर सिंह की गतिविधियों को पूरी जानकारी रोज़ बरोज़ होती रही। आज़मगढ़ में स्तिथ 206 नं0 की सेना कर्नल मिलमैन की सेनापतित्व में कुंवर सिंह का सामना करने के लिए 22 मार्च 1858 को भेजी गयी। कुंवर सिंह ने रात्रि भोज के समय मिलमैन की सेना पर भीषण हमला कर दिया स्थिति नाजुक देख मिलमैन भाग खड़ा हुआ।

मिलमैन की हार की सूचना लार्ड कैंनिग को इलाहाबादमें मिली। सूचना विक्षुब्धकारी थी। अतः वायसराय ने लार्ड मार्कर के सेनापतित्व में एक सेना बनारस होते हुए आज़मगढ के लिए रवाना कर दिया। इसी बीच गाजीपुर, बनारस से, 46 और 29 नं0 की पल्टन लेकर कर्नल डेम्स आज़मगढ़ पहुंचा। आज़मगढ़ के मिरिया और सेहदा के पास दोनो शाक्तियों के बीच भयंकर मुठभेड़ हुई जिसमें विद्रोही सेना का पल्ला भारी था। बाध्य होकर कर्नल डेम्स और मिलमैन को आज़मगढ़ वापस आना पड़ा।

अप्रैल 1858 को सेनापति लार्ड मर्कर की सेना ने ग्राम सरसेना में पड़ाव डाला दूसरे दिन सुबह आगे बढी। कुंवर सिंह को गतिविधि का ठीक पता था और आज़मगढ़ पहुंचने से पहले ही हमला करने के लिए अपनी सेना को रास्ते के दोनों ओर बिछा दिया। विद्रोहियों की आहट मिलते ही लार्ड मार्कर ने अपना घोड़ा रोक दिया और बैलगाड़ी, हाथी और ऊंट पर लदी युद्ध सामग्री के पहुंचने का इन्तेज़ार करने लगा। देखते ही देखते दोनों ओर से विद्रोहियों की गोलियां बरसने लगी। मार्कर ने तोप के गोलों से विद्रोहियों के छिपने और आड़ लेने वाले घरों पर तोप के गोले बरसाये। ज्यों ही विद्रोही बाहर आये उन पर हमला किया गया। विद्रोहियों ने पीछे हटकर तमसा (टोंस) नदी के पुल पर मोर्चा संभाला। कुंवर सिंह ने पुल की ऐसी हालत कर दी थी कि उसे पार कर पाना सम्भव न था। 6 अप्रैल 1858 को दिन में 11 बजे टोंस नदी के पुल पर युद्ध आरम्भ हुआ। घण्टों युद्ध चलता रहा। परिणाम का अनुमान लगा, विद्रोहियों को बच निकलने का संकेत देकर कुंवर सिंह ने शहर पर इस प्रकार घेराबन्दी की। मार्कर को अंग्रेजो के केन्द्र पर पहुंचते ही घेरे में ले लिया गया। बड़ईदाड पहुंचन का निर्देश दिया और स्वमं आगे बढे।

गंगा नदी पार करते समय अंग्रेजो की गोली से उनकी बांह घायल हो गई जिसे काटना पड़ा। 22 अप्रैल 1858 को जनरल ली ग्रैण्ड की सेना का सामना करना पड़ा। उनके पास केवल 1000 विद्रोही सैनिक थे। जान की बाजी लगाकर विद्रोहियों सेना को मार भगाया।

26 अप्रैल 1858 को 81 वर्ष की आयु में कुंवर सिंह का प्राणान्त हुआ। कुंवर सिंह 1857 के अन्तिम योद्धा थे जो अन्तिम क्षणों तक लड़ते रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मार्क्स कार्ल और एगेल्सः भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, पीपुल्स पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली,
2. 1857–59, पृ0 1971।
3. अहमद सैय्यद इकबालः शर्की राज्य जौनपुर का इतिहास, शिराज हिन्द, प्रकाशन भवन जौनपुर,
4. प्रथम संस्करण, 1968पृ0 292, 288, 298।
5. सिंह फूलबदनः आजमगढ़ का स्वतंत्रता संग्राम खण्ड़ एक, जिला स्वाधीनता संग्राम सैनिक संघ
6. आज़मगढ़, 1974 पृ0 27।
7. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, आज़मगढ़–1911 पृ0 96।
8. अहमद सैय्यद इकबालः शर्की राज्य जौनपुर का इतिहास, शिराज हिन्द, प्रकाशन भवन जौनपुर,
9. प्रथम संस्करण, 1968 पृ0 295।
10. सिंह फूलबदनः आजमगढ़ का स्वतंत्रता संग्राम खण्ड़ एक, जिला स्वाधीनता संग्राम सैनिक संघ
11. आज़मगढ़, 1974 पृ0 24।
12. वहीं, पृ0 28।
13. वहीं, पृ0 28।
14. वहीं, पृ0 28।
15. वहीं, पृ0 29
16. वहीं, पृ0 122–123।